सफ़र के महीने से अपशकुन लेना

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अब्दुलहमीद बिन जाफर दाग़िस्तानी

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2012 - 1433

IslamHouse.com

التشاؤم بشهر صفر

« باللغة الهندية »

عبد الحميد بن جعفر داغستاني

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2012 - 1433

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

सफ़र के महीने से अपशकुन लेना

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और इस बात को जान लो कि तुम्हारे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें अपशकुन लेने से मना किया है, आप ने फरमाया :

((لا عدوى ولا طيرة ولا هامة ولا صفر ولا غول))

''(प्राकृतिक रूप से) कोई संक्रमण (भावुक) नहीं है, तथा अपशकुन (प्रभावकारी) नहीं है, न हामा (उल्लू के बोलने) का कोई प्रभाव है, और न ही सफर का महीना (मनहूस) है, और न ही ग़ूल (जिन्न भूत) कोई चीज़ है।'' (बुखारी हदीस संख्या : 5387, मुस्लिम हदीस संख्या : 2220)

(कोई संक्रमण नहीं है) का अर्थ यह है कि कोई रोग और बीमारी अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी बीमार व्यक्ति से किसी स्वस्थ आदमी को नहीं लगती है। और न ही कोई अपशकुन है, और (न ही हामा कोई चीज़ है), ''हामा'' दरअसल सिर को कहते हैं, और यह एक पक्षी का नाम है क्योंकि वे लोग जाहिलियत के काल में पक्षियों जैसे कि उल्लू और कौवे से अपशकुन लेते थे, चुनांचे वे उन्हें उनके उद्देश्य से रोक देते थे। और (सफर का महीना अशुभ नहीं है) अर्थात् सफर का महीना अन्य महीनों के समान है, अतः बुराई का घटित होना इसी के साथ विशिष्ट नहीं है, जैसाकि अज्ञानी लोगों का भ्रम है। और (ग़ूल कुछ भी नहीं है) ग़ूल : जिन्नों और शैतानों (राक्षसों) की एक प्रजाती है, अरब यह गुमान करते थे कि ग़ूल चटियल मैदानों में लोगों को दिखाई देते थे तो वे विभिन्न रूपों में बदलते रहते थे और उन्हें रास्ते से भटका देते थे, फिर उनका विनाश कर देते थे, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका खण्डन किया और इसे व्यर्थ करार दिया . . .

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अपशकुन लेना शिर्क है, अपशकुन लेना शिर्क है।'' (सुनन अबू दाऊद 4/17).

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया : ''हम में से कोई नहीं मगर (उसके दिल में कुछ न कुछ बुरा शकुन पैदा हो जाता है), किन्तु अल्लाह तआला तवक्कुल के द्वारा इसको समाप्त कर देता है।''

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अपशकुन यह है जो तुम्हें आगे बढ़ा दे या तुम्हें रोक दे।'' (मुसनद अहमद 1/213, इसकी सनद ज़ईफ है) तथा अहमद के यहाँ अब्दुल्लाह बिन अम्र की हदीस से वर्णित है कि : ''जिस व्यक्ति को अपशकुन उसकी ज़रूरत से रोक दे तो उसने शिर्क किया। लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर! इसका कफ्फ़ारा क्या है ? आप ने फरमाया : यह कि उनमें से कोई व्यक्ति यह कहे कि : ऐ अल्लाह! तेरी भलाई के अलावा कोई भलाई नहीं, और तेरे शकुन के अलावा कोई शकुन नहीं और तेरे अलावा कोई पूज्य नहीं।'' (मुसनद अहमद 2/220).

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''सबसे अच्छी चीज़ फाल है, और वह किसी मुसलमान को नहीं लौटाती है, जब तुम में से कोई आदमी ऐसी चीज़ देखे जिसे वह नापसंद करता है तो उसे यह कहना चाहिए कि : अल्लाहुम्मा ला याती बिल–हसनात इल्ला अन्त वला यदफउस्सैयिआत इल्ला अन्त, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिक'' (ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई अच्छाइयों को नहीं ला सकता, और तेरे सिवा कोई बुराईयों को नहीं टाल सकता, और न नुक़सान से बचने की ताक़त

है और न लाभ उठाने की शक्ति मगर केवल तेरी ही तौफ़ीक़ से।'' (सुनन अबू दाऊद 4/19).

कुछ जाहिल व गंवार लोगों की यह आदत है कि वे सफर के महीने से अपशकुन लेते हैं, चुनाँचे वे इस महीने में न शादी करते कराते हैं, न यात्रा करते हैं और न ही इस महीने में तिजारत (लेनदेन) करते हैं, तथा वे इस महीने में बहुत अधिक डर अनुभव करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि सफर का महीना बुराइयों को जन्म देता है और खुशी को समाप्त कर देता है, हालांकि अल्लाह की क़सम वह अन्य महीनों और साल के अन्य दिनों के समान है।

कुछ अज्ञानी लोग सफर के महीने की अन्तिम बुधवार को सलाम (शांति) वाली क़ुर्आन की आयतें, उदाहरणस्वरूप : ﴿سلام على نوح في العالمين﴾ लिखते हैं, फिर उन्हें बरतनों में डाल कर पीते हैं, उनसे तबर्रुक (आशीर्वाद) लेते हैं, और एक दूसरे को उपहार देते हैं, क्योंकि उसके बारे में उनका यह विश्वास होता है कि ऐसा करना बुराइयों को समाप्त कर देता है। जबकि यह एक भ्रष्ट विश्वास, घृणित अपशकुन और घिनावनी बिदअत है, जिसके करने वाले का हर एक को खण्डन करना चाहिए।

कुछ लोग झूठ–मूट अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक झूठी मनगढ़ंत हदीस रिवायत करते हैं, चुनाँचि वे कहते हैं कि : ''सफर के महीने का अन्तिम बुधवार निरंतर नहूसत का दिन है।'' (अल्लआली–अल–मस्नूआ 2/458)

हालाँकि यह एक झूठ और मनगढ़ंत आरोप है।

तथा कुछ अन्य लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ बांधते हुए कहते हैं :

''जिसने सफर के महीने के निकल जाने की शुभसूचना दी, उसे मैं जन्नत में दाखिल होने की खुश्ख़बरी दूँगा।'' (कश्फुल–खिफा 2/309)

और यह भी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ और आरोप है। इनके अलावा अन्य हदीसें भी गढ़ी गई हैं।

कुछ लोग झूठ–मूट यह दावा करते हैं कि सफर के महीने की अन्तिम बुधवार को आसमान से एक बीमारी उतरती है, अतः वे लोग अपनी हाँडियों को पलट देते हैं और अपने बरतनों को ढाँप देते हैं, इस भय से कि वह कथित बीमारी उसमें न उतर जाए।

अल्लाह के बंदो ! अल्लाह ने हमें अच्छे विश्वास, स्पष्ट संदेश और बंदो के सरदार के अच्छे पालन के द्वारा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की अज्ञानता

व मूर्खता और जाहिलियत (अज्ञानता) के समय काल के अंधविश्वास से मुक्ति प्रदान की है।

और उपर्युक्त अपशकुन (निराशावाद) और बिदअत (नवाचार) का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वभाव और आचरण से कोई संबंध नहीं है, जबकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ [الأحزاب:٢١]

निःसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (के व्यक्तित्व) में उत्तम आदर्श (बेहतरीन नमूना) है।'' (सूरतुल–अहज़ाब : 21)